

उस कौम को शमशीर की हाजत नहीं रहती, हो जिसके जवानों की खुदी सूरते फ़ौलाद।

— इकबाल



ऑल वर्ल्ड बोहरा जर्नल

(मासिक)

रजि: RAJH/9396

जनवरी : 2009

वर्ष -16

अंक 7

मूल्य 3 रु

वार्षिक 35/- रु.

धर्मान्धों का यज़ीदी किरदार



मस्जिद हमले के कुछ घायल

- ① हाजी इस्माईल जी कम्पाउन्डर
- ② बानू बाई नाथ
- ③ सैफुद्दीन भाई ऊन्टाला वाला
- ④ हाजी सादिक अली मुहिब, शब्बीर अली बादशाह और एक अन्य साथी
- ⑤ हातिम अली जयपुर
- ⑥ मोहम्मद हुसैन दाऊद मोहम्मदजी वाला

18 जनवरी 1975 ई. मुहर्रम की छठी तारीख थी। उदयपुर में मस्जिद से रूह निकल जाने की बात कह कर मोहल्ला मोइयदपुरा की मस्जिद की बराअत करने वाले (छोड़ने वाले) शबाब समर्थक लोग अचानक किसी फरमान के तहत मस्जिद मोइयदपुरा पर कब्ज़ा करने के लिये उतावले हो गये।

लेकिन झिझक यह थी, कि बोहरा यूथ के सैकड़ों मूमिनीन और मूमिनात मस्जिद के अन्दर इमाम हुसैन (अ.स.) का ज़िक्र सुनने वा'ज़ के लिये बैठे हुए थे। चूँकि शबाब के लोग बराअत के सबब मन में पैदा हुए हसद और कपट के सबब सीधे आकर ज़िक्र-हुसैन (अ.स.) में शामिल नहीं हुए, बल्कि अपनी कमज़र्फी की बिना पर किसी एक जगह इकट्ठा होकर और हथियारों से लैस होकर सामूहिक तौर पर जूते पहने हुए मस्जिद की बेहुरमती करते हुए अन्दर घुस गये और बैठे हुए निहत्थे मूमिनीन पर चाकूओं, लाठियों से हमला कर दिया।

आते ही मस्जिद में जलती हुई ट्यूब लाइटें फोड़नी शुरू कर दीं ताकि वहां बैठे हुए लोग अपने बचाव के लिये दौड़ें तो उनके पांव ज़ख्मी हो जायें। खुद जूते पहने रहे कि उन्हें कोई तकलीफ न हों। ये लोग एक ज़हरीला पाउडर भी हवा में उछाल रहे थे। लेकिन किसी को इससे कोई तकलीफ नहीं पहुंची। अलबत्ता शबाब के एक व्यक्ति की आंखें इस पाउडर के गिरने से चली गईं।

इस खूनी हमले में बोहरा यूथ के लगभग तीन सौ पिचहत्तर मर्द-औरतें ज़ख्मी हो गये। एक ज़ख्मी बुजुर्ग रजब अली चौरासी वाले की तो कुछ दिनों के बाद मौत हो गई। एक बुजुर्ग हाजी इस्माईलजी कम्पाउडर, मोहम्मद हुसैन जी दलाल और मोहम्मद हुसैन जी दाऊद, मोहम्मद जी वालों के सिरों पर चाकू की गहरी चोट लगी थी। वे भी ज़्यादा अर्से ज़िन्दा न रह सके।

इन घायलों में कई नामवर लोग थे जिनमें कई बुजुर्गों और नौजवानों के अलावा मरहूम गुलाम अब्बास जी रस्सा वाले और मरहूम अकबर अली दाऊद मोहम्मद जी वाले भी थे। एक बहन असमा बाई डी.एम. की तो बत्तीसी ही तोड़ दी गई और एक बहन को ऊपर की मंज़िल से नीचे फेंक दिया गया। एक पहलवान माने जाने वाले शख्स ने तो लाऊड स्पीकर का स्टेण्ड ही उठा कर लोगों को मारना शुरू कर दिया। शायद ये ज़ालिम लोग नहीं जानते थे कि मारने वाले से बचाने वाला ज़्यादा ताकतवर है।

उस दिन जब इन ज़ख्मी लोगों का जुलूस उदयपुर की जनता को अवगत कराने के लिये बाज़ारों और शाहराहों से निकाला गया तो जिसने भी देखा, उसकी आंखें डबडबा आईं। अस्पताल पहुंचे तो मरीजों के पंलग कम पड़ गये। एक-एक पलंग पर तीन-तीन, चार-चार ज़ख्मी थे और कितने ही नीचे धरती पर ही सोये हुए थे।

उन्हीं दिनों में देश के वरिष्ठ नेता श्री अटल बिहारी जी वाजपेयी भी उदयपुर पधारे और मस्जिद खुलवाकर देखा। वहां खून के धब्बे थे और लोगों के भारी तादाद में जूते बिखरे पड़े थे। बाद में उन्होंने सार्वजनिक बयान भी दिया था और इस घटना की घोर निन्दा की थी। उन्हीं दिनों सिर्फ इस हादसे का जायज़ा लेने तत्कालीन विधायक श्री योगेन्द्र हांडा भी उदयपुर आये थे और हादसे के शिकार लोगों से मिल कर हाथीपोल में सार्वजनिक सभा कर और घोर निन्दा करते हुए सरकार से उचित कार्यवाही करने की मांग की थी। उन्होंने प्रेस कान्फ्रेंस बुला कर भी अपना बयान दिया था।

इस खौफनाक हादसे के बाद भी ये कट्टरपंथी मस्जिद पर कब्ज़ा नहीं कर सके। जैसा ये चाहते थे वैसा ऊपर वाले ने होने नहीं दिया। लेकिन इतना ज़रूर हुआ कि दो माह से भी कम मुद्दत में बोहरा यूथ के लोगों द्वारा भण्डारी दर्शक मण्डप जैसे सार्वजनिक स्थल पर 106 जोड़ों का ऐतिहासिक विवाह उदयपुर के साथ तमाम दुनिया ने देखा और अपनी खुशी ज़ाहिर की।

डॉ. महदी हसन की उदयपुर आभद

मालेगाँव में रोशन ख्याल जमाअत के आला रूक्न और आलिम डॉ. महदी हसन साहब मुहर्रम में अशरः के लिये उदयपुर तशरीफ ला चुके हैं। उदयपुर जमाअत की तरफ से बहुत पहले से आपसे उदयपुर आने की दरखास्त की जा रही थी।

उदयपुर की सर ज़मीन पर आपका दिली खैरमकदम है।

नये साल की मुबारकबाद

इदारा बोहरा जर्नल की जानिब से तमाम मूमिनीन को मुहर्रम की पहली तारीख पर "नये साल की मुबारकबाद। नया साल आपके और आपके खानदान के लिए हर लम्हा खुशी और सेहत का पयाम लाये। इदारा इन घड़ियों में आपके इतिहाद, इतिफाक और कामियाबी की तमन्ना करता हैं।

हमारा सवाल: तहरीक को आगे बढ़ाने के लिए नौजवानों को किस तरह प्रोत्साहित किया जाए ? आपके सुझाव !

The role of youngsters in our movement. How can we encourage them to join in?

Please send your contribution to: The Editor : All World Bohra Journal , 73 Dr. Zakir Hussain Marg, Udaipur

इदारिया

“हुसैन! तेरी ज़माने को फिर ज़रूरत है”

सन् 61 हिज़री के मोहर्रम महीने में ईराक़ के शहर कर्बला की घटना ने दुनिया को वह सबक दिया है कि रहती दुनिया तक कोई ग़ैरतमन्द इंसान इसे कभी नहीं भुला सकेगा। बल्कि तमाम दुनिया अपनी गर्दियों, तकलीफों, और अत्याचारों – अन्यायों में इसी घटना के हर पहलू को याद कर न सिर्फ़ तस्कीन हासिल करेगी, बल्कि अपनी तकलीफों को दूर करने की तदबीरें भी इसी में तलाश करेगी। इस जंग में इन्सानियत, शराफत, इबादत, शुजाअत (बहादुरी), क़नाअत (संतोष), त्याग, बलिदान, हिम्मत, हौसला, मज़हबी रवादादी (धार्मिक सहिष्णुता), कुव्वते-इरादी (इच्छा शक्ति), ईमान और फ़राखदिली (सहृदयता) की आखिरी हदों को पार कर लिया गया है और यह हौसला दिखाया है, चंद अल्लाह वाले मज़लूमों ने।

दर हकीकत, कर्बला की जंग हक़ और बातिल, सच और झूठ, अच्छाई और बुराई, इन्किसारी और तकब्बुर (विनम्रता और घमंड), इन्सानियत और हैवानियत की फ़ैसलाकुन जंग है। ज़ालिमों का ख़ात्मा करने वाली, मज़लूमों की आवाज़ बुलन्द करने वाली, इन्सानियत का सिर ऊँचा करने वाली और तागूती ताकतों को तबाह करने वाली जंग है।

अल्लाह की राह में खुद को ही नहीं, अपने पूरे कुन्बे को कुरबान कर देने वाले, नबुव्वत की तबलीग़(प्रचार) के लिये सूरज बनकर चमकने वाले, गुमराहियत के अंधेरे में रोशनी बन कर उजाला करने वाले, मज़लूमों, बैकसों, लाचारों, गरीबों की हिमायत में सब कुछ न्यौछावर कर देने वाले शहीदे-आ'ज़म इमाम हुसैन (अ.स.) की सरदारी में जब इस लड़ाई की शुरुआत हुई तो हर एक अमल की इन्तिहा होने लगी। नहर पर से ख़ैमे हटाये गये, पानी बन्द किया गया तो तीन दिन तक झुलसा देने वाली गर्मी में छोटे छोटे बच्चों सहित भूखा प्यासा रह कर इन्तिहाई सब्र (असीम संतोष) का परिचय दिया। छः माह के, प्यास से तड़पते हुए बच्चे के लिये एक घूंट पानी मांगने पर उनका तीर मार कर गला छेदा गया, तो बाप ने यह सदमा भी सह लिया और दिल पर पत्थर रख कर दिन भर अपने फ़रज़न्दों, अजीजों और साथियों के लाशों को उठाते रहे और ग़ज़ब का सब्र दिखाते रहे। उस पर तुरा यह कि रंज और ग़म के इस जान लेवा माहौल में अपनी प्यारी बेटि का ब्याह रचा कर ऐसी मुसीबत में भी खुशी-खुशी अपना फ़र्ज अदा कर गये। अल्लाह की राह में उम्मत की भलाई के लिये अपना सब कुछ हंसते-हंसते कुरबान कर गये। उसी अज़ीम इन्सान इमाम मज़लूम (अ.स.) के ख़ानदान का एहसान है कि आज भी उनकी उम्मत के मज़लूम बन्दे उनके ईमान परवर चरित्र में अपनी राहत के पहलू तलाश करते हैं। हज़रत अब्बास अलमदार के गुलाम अपने उसूल परस्त भाइयों की मदद के लिये बेकरार रहते हैं। हबीब इब्ने मज़ाहिर के चाहने वाले अपनी कुरबानी देने में बेताबी का इज़हार करते हैं। हज़रत ज़ैनब (अ.स.) की कनीज़ें अपने हक़ परस्त भाइयों की मदद करने में आगे-आगे रहती हैं।

ज़ालिमों के सामने आवाज़ बुलन्द करने, मज़लूमों की हिमायत में संघर्ष करने, बदकिरदारों का विरोध करने, ना अहलों की गुलामी से दूर रहने, धार्मिक शक्ति के ग़ैर वाजिब इस्तेमाल पर चुप न बैठने, मुसीबत के वक़्त सब्र करने और ज़रूरत पड़ने पर हक़ की बात हौसले से कहने की परम्परा आज भी कर्बला की देन की सूरत में नज़र आती है। बोहरा यूथ जैसी तहरीक भी ऐसी ही परम्पराओं का नतीजा होती है।

इमाम हुसैन (अ.स.) की पूरी ज़िन्दगी इस्लाम और इन्सानियत के लिये वक़फ़ थी। उस ज़माने में औरतों पर हो रहे अत्याचारों को ख़त्म करने के लिये आपने “अंजुमन-हिल्फुल-फ़ुजूल” बनाई थी। जिसके अनगिनत लोग मेम्बर बन गये थे। यह इस बात की दलील है कि अपने अधिकारों की हिफ़ाज़त के लिये कोई संस्था बना कर ईमानदाराना सामूहिक कोशिश की जा सकती है। इसका विरोध अन्याय ही माना जायेगा। बुजुर्ग़ सहाबी हज़रत अबीज़र ग़फ़ारी (र.अ.) को जिला वतन कर ऐ'लान किया गया था, कि कोई उन्हें रूख़सत करने न जाये। लेकिन हुसैन इमाम (अ.स.) अपने वालिद माजिद के साथ ऐ'लान के बावजूद आपको विदा करने तशरीफ़ ले गये। यह इस बात की खुली इजाज़त है कि ऐसे अनुचित फ़रमानों की अनदेखी कर लेनी चाहिये। आशूरा की रात कर्बला में इमाम (अ.स.) ने अपने सभी सहाबियों को इकट्ठा कर साफ़-साफ़ कह दिया था कि तुम लोग मुझे-अकेला छोड़ कर रात के अंधेरे में निकल जाओ। इन लोगों को सिर्फ़ मुझसे ही काम है। यह बला की हिम्मत अपने सहाबियों की सलामती के लिये हज़रत ने दिखाई और कभी यह नहीं कहा कि मैं जहाँ जाऊं मेरे साथ हुजूम बना कर चलो।

कर्बला में एक तरफ़ यज़ीद (अल्लाह की लानत हो उस पर) का हज़ारों का हथियार बंद लश्कर था और दूसरी तरफ़ भूखे प्यासे चंद लोग थे। तो यज़ीद (ला'नत) की बेपनाह फौज का ज़िक्र आज तक किसी ने फख़ से नहीं किया है और हक़ परस्त हुसैन के चंद साथियों को तमाम दुनिया ने हमेशा अकीदत (श्रद्धा) और सम्मान से देखा। ज़ाहिर है कि किसी हक़ परस्त तहरीक में शामिल लोगों की तादाद बहुत ही कम होती है और जुल्म करने वालों की तादाद ज़्यादा होती है। कम तादाद में होने से हक़ परस्तों के इरादों में कभी कमी नहीं आती। क्योंकि उन्हें खुदा के सिवाय किसी का डर नहीं रहता।

तमाम आलम आज हुसैन मज़लूम के मातम में डूबा हुआ है। ऐसे में क्या हम 'कर्बला' से कुछ सबक लेंगे। सिर्फ़ हुसैन का नाम लेकर मातम करना या उनके नाम के हर जगह पोस्टर बैनर लगा लेना ही काफी नहीं है, बल्कि हुसैनियत को दिल में उतार कर अमल करने से ही हम अपना कुछ फ़र्ज अदा कर पायेंगे। क़ब्रिस्तानों में किसी के मुर्दों को दफ़न न होने देना, क़ब्र से लाश निकलवा कर फिकंवा देना, मस्जिदों में जाने से रोकना, मस्जिदों में अलग-अलग जगह कायम करना, ज़िक्रे-हुसैन करने वाले लोगों पर हमला करना यज़ीदियत की निशानियाँ हैं। अगर यह होता रहा तो फिर यह कहना ही पड़ेगा कि :-

“क़दम-क़दम पे यज़ीदों की आज कसरत है,
हुसैन तेरी ज़माने को फिर ज़रूरत है।”

— आबिद अदीब

बोहरा यूथ की मुजाहिद ख्वातीन



रुकैय्या बाई मोहम्मद हुसैन खोलिया वाला

रुकैय्या बाई मोहम्मद हुसैन खोलिया वाला बोहरा यूथ की एक कर्मठ कार्यकर्ता है आप 65 साल की हैं और अब तक बोहरा यूथ की तहरीक में आये सभी उतार चढ़ाव आपने बहुत नज़दीक से देखे और महसूस किये हैं।

बोहरा यूथ तहरीक की बात उठते ही आपको 40 साल पुरानी एक घटना याद आ गई जो आपके साथ हुई थी। आपने हमें बताया कि उस वक़्त की बात है जब आपके बच्चे मदरसे में पढ़ने जाया करते थे।

इसी बीच एक दिन आपको स्कूल फीस अधूरी भरी होने का बहाना बनाकर जमाअत में बुलाया गया और आप पर जान लेवा हमला किया गया। लेकिन खुदा के फज़लों करम से आप बच गईं। आप कई बार जख्मी हुईं और कई बार आपको झूठे इल्जाम में जेल भी जाना पड़ा।

एक बार चौथी रमजान को जब शबाब गुट के लोगों ने मारपीट की और यूथियों को मोइयदपुरा मस्जिद में नमाज़ नहीं पढ़ने दी। सभी यूथियों ने आस पास के यूथी घरों में नमाज़ अदा की, जिसमें एक घर आपका भी था। मोइयदपुरा मस्जिद में भी आपको तरह तरह से परेशान किया जाता है, ताकि आप थक हार कर सच्चाई से हट जाएं। लेकिन आप हमेशा हक पर

साबित कदम रही। जब मस्जिद में ताला लगा दिया गया था तब आपने सड़क पर भी नमाज़ पढ़ी। लेकिन हक व सदाकत का रास्ता नहीं छोड़ा।

आपके ससुराल और मांईके के सभी फर्द शबाब में हैं। लेकिन आपने अकेले होते हुए भी हक पर कायम रहना ज़्यादा पसन्द किया। आप पर कई जुल्म हुए लेकिन आपने कभी सच्चाई का रास्ता नहीं छोड़ा। आप कहती हैं कि यह खुदा का ही फज़ल है कि हम तादाद में इतने कम होते हुए भी अपनी तहरीक को कायम रख पाये हैं। हमें चाहिए कि हम सभी एक जुट हो कर मुश्किलों का सामना करें। क्योंकि हमारी एकता ही हमारी ताकत है।

उनका मानना है कि हमारी जवान पीढ़ी को आगे आकर और सभी को एक जुट रहकर अपनी तहरीक की तरक्की के लिए काम करना चाहिए। आपके मरहूम शोहर भी आखिर वक़्त तक बोहरा यूथ के मुजाहिद थे। आपका बेटा जुल्फिकार अली बोहरा यूथ का एक कर्मठ कार्यकर्ता और नवासा तौसीफ अली टीडी वाला स्टूडेंट वेलफेयर सोसायटी का अध्यक्ष है।

अल्लाह आपको और आपके अहलो अयाल को सलामत रखे।

आमीन!

— Zeenat Banu Khakharwala

रक्तदान के लिए अपील

बोहरा यूथ मेडिकल रिलीफ सोसायटी, 8 मोहर्रम बरोज़ रविवार, को शहीद दिवस मना रही है। इस मौके पर रक्तदान शिविर रखा गया है।

यहाँ रक्तदान कर आप न केवल इमाम हुसैन (अ.स.) को ख़िराजे अकीदत, बल्कि मुम्बई के आंतकवादी हमले में शहीदों के प्रति अपनी श्रद्धांजली अर्पित कर देश के प्रति सम्मान प्रकट करें।

आप सभी हज़रत से गुज़ारिश है कि ज़्यादा से ज़्यादा तादात में आकर रक्तदान करें।

“ये भी रुख़सत हो गये”

सफिया बाई ओगना वाला उर्फ भीकल बाई

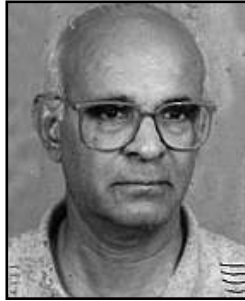
मोहतरमा सफिया बाई ओगना वाला, उर्फ भीकल बाई, एक मुख़्तसर बीमारी के बाद तारीख 8 दिसम्बर बरोज सोमवार इस दारे फानी से कूच कर गई। आप बहुत ख़ामोश तबीयत की ख़ातून थी। ज़नाना मैयत की तजहीज़ो-तक्फ़ीन में एक मुजाहिद की तरह हमेशा मददगार रही, जिससे उनके लिये इज़्ज़त और अहतराम का ज़ब्बा हर दिल में था। उनके शोहर मरहूम जीवा भाई भी अखिरी दम तक बोहरा यूथ तहरीक के सच्चे हमदर्द की तरह रहे।



मरहूमा की औलाद में तीन बेटे और तीन बेटियां हैं। परवरदिगार मरहूमा को जन्नत नसीब करें। आमीन!

अब्बास अली ओगना वाला

बोहरा यूथ की इस्लाही तहरीक के हिमायती जनाब अब्बास अली ओगना वाले का अचानक इतिकाल तारीख 2 दिसम्बर बरोज मंगलवार को हो गया।



मरहूम बोहरा यूथ के एक जांबाज़ मुजाहिद की तरह अपने हलके में सरगर्म रहे। खुशमिज़ाज और मिलनसार आदमी थे। हर शख्स से खुल कर मिलते थे।

आप माइन्स डिपार्टमेन्ट में हरदिल अज़ीज कार्यकर्ता थे और वहीं से रिटायर हुए थे। आपके वालिद असगर अली भी बोहरा यूथ के कट्टर हामी और जोशीले बुजुर्ग थे।

मरहूम अब्बास अली अपने पीछे अपनी अहलिया के अलावा एक बेटे और एक बेटा छोड़ गये हैं।

इदारा “बोहरा जर्नल” उनके मगफिरत की दुआ करता है।



28 ज़ायरीन का काफिला रवाना

उदयपुर, रविवार 14 दिसम्बर 2008, को बोहरा यूथ एवं दाऊदी बोहरा जमाअत के 28 ज़ायरीन का काफिला पंजतन-ए-पाक की ज़ियारत के लिए रवाना हुआ।

वही 4 नवम्बर को हज की यात्रा पर रवाना हुए 65 हज यात्रियों के काफिले में से 12 हज यात्री का पहला जत्था हज का सफर मुकम्मल कर अपने वतन लौट आया है। बचे हुए 53 हज यात्रियों का काफिला मदीना से पंजतन की ज़ियारत के लिए रवाना हो गया है, जो जोर्डन, इजीप्ट, सीरिया, ईरान, ईराक की दीगर ज़ियारत कर 15 जनवरी तक उदयपुर लौटेगा।



मुस्लिम महिला सशक्तीकरण पर सेमिनार

मानवाधिकार दिवस पर बुधवार, 10 दिसम्बर, को महिला सबलीकरण पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन सुखाड़िया यूनिवर्सिटी के राजनीति विज्ञान विभाग व इंस्टीट्यूट फॉर पीस स्टडीज़ व कॉन्फ्लिक्ट रिसोल्यूशन के सौजन्य से किया गया जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. असगर अली इंजीनियर ने अपने विचारों से महिलाओं का मार्गदर्शन किया। संचालन डॉ. जेनब बानू ने किया।

डॉ. असगर अली ने कहा कि महिलाओं का सबलीकरण तब तक नहीं हो सकता जब तक कि उसके पास अपने अधिकारों के बारे में फर्स्टहैंड ज्ञान नहीं होगा। उन्होंने कहा कि महिलाओं को कुरआन शरीफ और शरीयत के कानून की मूल जानकारी होना बहुत ज़रूरी है। कुरआन ने 1400 साल पहले महिलाओं को सम्पत्ति का अधिकार प्रदान किया और माँ, बहन, बेटे और बीबी के रूप में विरासत का हक दिया। कानून और शरीयत ने महिलाओं को काफी अधिकार दिये हैं, लेकिन आज के समय में वे उन्हें नहीं मिल पा रहे हैं। उन्होंने महिला विकास के लिए अनिवार्य शिक्षा को विकास का प्रथम सोपान बताया।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. अंजू कोहली ने कहा कि महिला सबलीकरण पुरुष विरोधी नहीं है, बल्कि पुरुष अधिकारों के साथ महिलाओं को भी उनके अधिकार दिलाने का अभियान है। डॉ. जेनब बानू ने लैंगिक सशक्तीकरण के अवधारणात्मक विश्लेषण पर विचार व्यक्त किये। उद्घाटन सत्र के बाद तीन तकनीकी सत्र हुए, जिसमें कुरआनी हकूक के यथार्थ, जेंडर की व्याख्या एवं अर्थ और महिला मानवाधिकार पर चर्चा की गई।

मुस्लिम महिला सशक्तीकरण कार्यशाला के दूसरे दिन पहले तकनीकी सत्र में “मुस्लिम महिला पूर्वाग्रह एवं भ्रम” विषय में चार बीवियों, तीन तलाक, परिवार नियोजन व विरासत जैसे विषयों के बारे में चर्चा की गई। डॉ. असगर अली इंजीनियर ने चार बीवी पर चर्चा करते हुए कहा कि एक से अधिक बीवी के अखिल भारतीय स्तर के आकड़ों को देखा जाए तो इसमें सबसे अधिक जनजातियों का 14%, दलितों का 11%, उच्च स्वर्ण जाति का 5.8% व मुसलमानों का 5.6% हिस्सा है। इस तरह अन्य वर्गों की महिलाएं इस परेशानी से ज्यादा ग्रस्त हैं। दूसरे सत्र में डॉ. वसुंधरा मोहन ने मुस्लिम लड़कियों की शिक्षा पर ज्यादा जोर देकर उनको स्कूलों व कॉलेजों में प्रवेश दिलाने की बात कही। तीसरे सत्र में “मुस्लिम महिला रोजगार पर डॉ. फरीदा शाह ने विचार व्यक्त किए व चौथे सत्र में समूह चर्चा की गई।

“मुस्लिम महिला सबलीकरण” कार्यशाला के अन्तिम दिन शुक्रवार को समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए डॉ. असगर अली ने कहा कि “ज्ञान बिना पक्के इरादे अनुपयोगी है। लिहाजा कार्यशाला से प्राप्त ज्ञान को एक अज़म के साथ जीवन में उतारना चाहिये। समाज में बदलाव हिम्मत और पक्के इरादे से ही लाया जा सकता है। हमें आगे बढ़ने के लिए पहले रणनीति बनानी चाहिए जिसके लिए शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ना ज़रूरी है। रास्ते में आने वाली कठिनाईयों से घबरा कर रुकना नहीं चाहिए। किसी भी बड़े काम को करने के लिए अक्ल के साथ-साथ जुनून का होना ज़रूरी है।

समारोह की मुख्य अतिथि सामाजिक कार्यकर्ता जिनी श्री वास्तव ने कहा कि “महिला संगठन” महिला सबलीकरण की आधारशिला है। अतः महिलाओं को मिलकर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना चाहिए। मुस्लिम महिलाओं में जुड़ाव कम होने के कारण उन्हें विधवा या परित्यक्ता होने पर कोई सहारा नहीं मिलता। अपने दुःखों को दूर करने के लिए एक-दूसरे से जुड़ाव रखना ज़रूरी है। अंत में डॉ. जेनब बानू R.V. ने धन्यवाद प्रेषित किया।

— खैरूननिसा गुमाना

Letter to the Editor :

आप अपने तअस्सुरात और मशविरों से आगाह करते रहें। अधिकतम 200 शब्दों में लिखें।

We invite you to write to us with your views and opinion on any issue. Your letters should not be more than 200 words.

Addressed to: The Editor, All World Bohra Journal, 73, Dr. Zakir Hussain Marg Udaipur 313001, E-mail : bohra.journal@hotmail.com

Expert Speak

Every month we shall bring you a regular column on management studies by a management expert in the hope that it benefits our young readers.

Marketing Innovation - Part 1

Strategies for creating awareness

The micro-management of socio-economic reforms is a stupendous task. National economies are undergoing rapid and often wrenching transformation. Two forces underline the dramatic changes. One is globalization, the explosive growth of global trade and international competition. Another one is technological change.

This decade has witnessed remarkable advances in the availability of information and the speed of communication. There is endless outpouring of new products. They open up new opportunities as well as create threats. Today's markets are changing at incredible pace. We are witnessing a power shift from manufactures to giant retailers. Retailing these days is like showbiz. The fashion stores across the city appear unwittingly involved in keen competition to establish their primacy. There is a sea change reflected in the dreaming, styles, habits and attitudes of people at large.

Exposure to Western culture has made an impact on the lifestyles and fashion trends. In this regard the satellite channels have played a key role. The ambitious buyer is on a continual quest to discover new, stimulating brands and unfamiliar collections. To cater to the inner increasing demands there is mushrooming of retail stores.

The topic assumes importance as it attempts to highlight the changing market scenario. It also suggests a suitable framework for targeting and planning the unprecedented purchasing problems related to lack of consumer awareness and another fold of laying down strategies for success in retail purchasing.

Suggestions

Innovative Strategies

What shoppers should be doing to remain aware and sustain their image and personality.

The following strategies are suggested:

1. The Situation Analysis Strategy

Every consumer has to draw up a situation analysis, which probes the product and its scope. This will entail studying who and what comprises the market and in what way does the product appeal. A SWOT analysis (strengths, weaknesses, opportunities and threats) has to be realistically compiled to serve as a guideline, especially for an industry such as garments where empirical evidence is found lacking and a rash of brands have developed on its anatomy.

2. Marketing Objectives Strategy

Financial objectives which determine the long-term return on investment have to be viewed. They should clearly define the type of purchase, i.e. casual clothing, party-wear dresses, woolen clothes etc., and the number of pieces to be purchased at a pre-determined unit price through awareness exercises, if necessary with some test marketing.

3. Market Search Strategy

The aspect of determining the market in a disorganised market like ours takes some doing. In a country like ours, which is diverse in culture and languages and which comprises just 5% educated population, financially better endowed shoppers must take some time off to study the size of the market, retailer's perceptions and selling behaviour. Understanding the retailers is therefore very essential and sustained dialogues with them can only result in assessing true market potential.

- Dr Kaneez Fatima Sadiwala
Professor-cum-Director,
Aravali Institute of Management Studies,
email: moizkaneez@yahoo.com

आबाद रहे अल्लाह का घर

मोहल्ला रसूलपुरा जिस मस्जिद के नाम से मशहूर है, उस मस्जिद रसूलपुरा की तामीर को एक सौ साल पूरे हो गये हैं। अल्लाह के इस घर को उसके बन्दों ने हमेशा आबाद रखा है। इस इबादतगाह में नमाज़ की तवल्ली कराने वाले इमामों की एक लम्बी फहरिस्त है। जिसमें शेख गुलाम अब्बास जी जयपुर वाले, मुल्ला अली मोहम्मदजी बम्बोरा वाले, शेख सज्जाद हुसैन पृथ्वीराज वाले, शेख याकूब अली राजनगर वाले, शेख अहमद अली राजनगर वाले, शेख सज्जाद हुसैन मशरक वाले, शेख हसन अली सारंगपुर वाले, मुल्ला मोहम्मद सालेह सारंगपुर वाले, मुल्ला सालेह मोहम्मद बड़ोदा वाले, मुल्ला मुहम्मद अली मशरक वाले वगैरा अहम हैं। ये सब मरहूमिन हैं। इनके अलावा अभी अली मोहम्मद भाई फराक वाले, आकिब हुसैन, पीर अली और सज्जाद हुसैन यह खिदमत अंजाम दे रहे हैं। असगर अली जावरिया वाले ने भी यह जिम्मेदारी निभाई है।

इस मस्जिद का हिसाब किताब पूरे तौर पर उदयपुर के रसूल जी वल्ली जी वालों के जिम्मे था। इस खानदान के बुजुर्ग मरहूम मोहम्मद अली, शरफ अली, रसूल भाई और मौजूदा वक्त में अब्बास अली आर.वी. भी इस खिदमत को अंजाम दे रहे हैं।

सन् 1956 ई. में इस मस्जिद के काम के लिये एक कमेटी तशकील की गई थी। तब ही से कमेटियां चली आ रही हैं।

एक सौ साल की इस मुददत में जिन आलिमों ने नमाज़ की तवल्ली कराई है और अब वे इस दुनिया में नहीं रहे हैं, अल्लाह पाक उन्हें मगफिरत फरमाये— आमीन।

जो लोग अभी इमामत की जिम्मेदारी निभा रहे हैं, जिन हज़रात ने अब तक अज़ान देने और "सना" पुकारने की जिम्मेदारी और जिन हज़रात ने इस मस्जिद में कारे—तामीर से लेकर मजलिसों वगैरह के अहतमाम और रख—रखाव में हिस्सा लिया और इस वक्त कमेटी के जिम्मेदार मेम्बरान और इसे इबादत से आबाद करने वाले तमाम मूमिनीन व मूमिनात के हक में दुआ करते हैं कि अल्लाह पाक उन्हें जज़ाए — खैर अता फरमाये। आमीन!



फ़ज़ीलत माहे-मोहर्रम की

मोहर्रम मुलहराम का महीना इस्लामी साल के एतबार से, साल का पहला महीना माना जाता है। इसकी अज़मत और फ़ज़ीलत इस्लाम और इस्लाम से पहले भी बराबर कायम रही। यह महीना बड़े अहतमाम और बरकत का महीना है। यह उन चार महीनों में से एक है, जिसमें जंग किसी तरह से जायज़ नहीं। वे चार महीने हैं ज़िलका'द, ज़िल-हज्ज, मोहर्रम और रजब। मुसलमानों के लिये मोहर्रम का महीना और इसका "आशूरा" का दिन एक बहुत बड़ी नेअमत है। जो ख़ास अहतमाम और तवज्जोह का मुस्तहक है। दसवीं मोहर्रम "आशूरा" का दिन मुबारक और तारीखी है। इसी दिन अल्लाह ने हज़रत मूसा (अ.स.) और उनकी कौम को फिरऔन के लश्कर से मुक्ति दी और फिरऔन और उसके लश्कर को नील नदी में डुबो दिया। इसी दिन हज़रत नूह (अ.स.) की किशती "जूदी" पहाड़ पर आई। एक रिवायत में है कि हज़रत रसूले— करीम (स.अ.) जब मदीना मुनवर:

तशरीफ ले गये और देखा कि यहूदी लोग इस दिन रोज़ा रखते हैं, तो आपने इस सिलसिले में पूछताछ की। जवाब में यही ऊपर वाली वजह मिली तो आपने (स.अ.) फरमाया कि— "मूसा (अ.स.) कि हम तुमसे ज़्यादा हकदार हैं।" फिर आपने खुद आशूरा का रोज़ा रखा और मुसलमानों को भी रोज़ा रखने का हुक्म फरमाया। तो शुरु में तो आशूरा का रोज़ा फ़र्ज़ था और इसका बड़ा अहतमाम किया जाता था। यह रोज़ा बच्चों से भी कराया जाता था। लेकिन जब रमज़ान के रोजे इस उम्मत पर फ़र्ज़ किये गये तो आशूरा की फरज़ियत खत्म हो गई। लेकिन रसूले करीम हमेशा इस दिन रोज़ा रखते रहे। इसी दिन अंबिया भी सब रोज़ा रखते थे।

और जब आशूरा के दिन इमाम हुसैन (अ.स.) की शहादत वाक़े हुई तो यह दिन कर्बला के मुजाहिदीन को याद करने और इबादत करने का दिन हो गया। मूमिनीन का बच्चा—बच्चा इस दिन भूखा प्यासा रह कर फाका करता है और इमाम मज़लूम को याद करता है।

बुराई से लड़ाई का प्रतीक है मोहर्रम

मोहर्रम अरबी कैलेंडर के पहले महीने का नाम है, लेकिन अब मोहर्रम पूरी दुनिया में हज़रत मोहम्मद (स.व.स.) के नवासे इमाम हुसैन और उनके परिवार वालों की शहादत की याद में मनाया जाता है। विश्व में फेले उनके मानने वाले मोहर्रम को अपने-अपने तरीके से मनाते हैं।

इमाम हुसैन को 61 हिजरी, अर्थात 680 ई. में मोहर्रम की दसवीं तारीख को उनके परिवार, दोस्तों और समर्थकों के साथ तत्कालीन शासक यज़ीद की फौज ने षडयंत्र से कर्बला ईराक में तीन दिनों तक भूखा प्यासा रख कर शहीद कर दिया था। इन्हीं शहीदों की याद में हर साल इस महीने की दसवीं तारीख को मोहर्रम मनाया जाता है।

शहीदों में इमाम हुसैन के साथ उनके बेटे, भतीजे, भांजे, भाई और दोस्त आदि शामिल थे। इसमें छः माह का अली असगर भी था।

यज़ीद अधर्मी शासक था। वह भी अपने को इस्लाम धर्म का नेता बताता था और अपने सभी गैर इस्लामिक कार्यों को सही साबित करने के लिए इमाम हुसैन का समर्थन चाहता था। इमाम हुसैन ने यज़ीद का साथ देने से इंकार कर दिया। इससे यज़ीद को अपना शासन अस्थिर दिखाई देने लगा। इसलिए उसने जन आक्रोश भड़काने से पहले ही

ऐसा षडयंत्र रचा कि इमाम हुसैन को अपना वतन मदीना छोड़ कर कूफा की ओर जाना पड़ा। उनके काफिले को यज़ीद ने कर्बला में चारों ओर से घेर लिया। वह क्रूरता का सबसे बड़ा प्रदर्शन था, जिसका मुखिया यज़ीद था। उस काफिले का तीन दिनों तक भूखा प्यासा रखने के बाद 72 लोगों की हत्या कर दी गई।

मोहर्रम का महीना शुरु होते ही मुस्लिम समुदाय के लोग शहीदों की प्यास को याद करते हुए सबील लगाते हैं, जिनमें दस दिनों तक शीतल पेय पिलाया जाता है। मजलिसों का आयोजन होता है, जिनमें ज़िक्र इमाम हुसैन किया जाता है।

आज से तेरह सौ साल पहले जो घटना घटित हुई उसका जिक्र करना इसलिए जरूरी है कि इससे हम अहिंसा के पुजारी के बलिदानों को याद कर सकें और यज़ीद की क्रूरता के प्रति विरोध प्रकट कर सकें। यह आज के परिवेश में भी तर्क संगत है।

इमाम हुसैन ने भी अपने बलिदान से हमें यह बताया कि, पापी चाहे जितना बलवान हो, उसका विरोध जरूर करना चाहिए, चाहे उसके लिए गर्दन क्यों न कटवानी पड़े।

— हुसैन उदयपुरी

कुरआन, अहादीस और नहजुल बलाग़ह

हज़रत-ए-अब्बास और ह. ज़ैनब (अ.स.)

1. कुरआन पाक :-

कुरआन - मुनाफिकीन (दम्भी लोग) और कुरआन

सुर : आले इमरान आयत 179

तुर्जमा : अल्लाह तआला की हिकमत के खिलाफ है कि मूमिनों को इसी तरह रहने दे जैसे अब है (याने सच्चे और झूठे ईमान का दावा करने वाले खलत मलत है) वह (याने अल्लाह सु.व.त.) बाज़ न रहेगा जब तक खबीस और तथ्यिब (wicked and good) को छोट कर अलग अलग न करे।

नोट :- यह तुर्जुमा आयत मज़कुरा के पहले हिस्से का है और चूँकि यह सूरः अन्कबूत की आयत 2-3 और 10-11 (माह दिसम्बर 2008) से मिलकर मुनाफिकीन के मुतअल्लिक अल्लाह (सु.व.त.) की मन्शा ज़ाहिर करता है, जर्नल के जनवरी 2009 की इशाअत का हिस्सा बनाया गया है, ताकि एक कड़ी मुकम्मिल हो जाए। (हवाला : तफहीमुल कुरान)

टिप्पणी -

कुरआन शरीफ में आम इन्सानों को "अन्नास" से खिताब किया गया है। फिर इस "आम" का बंटवारा (catagorized) किया गया है और इस बंटवारे को "खासों" में बाँटा गया है। अमूमन बंटवारे के बाद कुरान इन "खासों" को इन नामों से खिताब करता है: 1. मुनकिर 2. मुश्रिक 3. काफिर

4. मुस्लिम 5. मूमिन और 6. मुनाफिक कुछ मुबस्सरीन मुत्तकीन (तक्वा वाले-परहेज़गार) को एक अलग category में शामिल करते हैं और कुछ इसको "मूमिनीन" का ही एक हिस्सा समझते हैं।

इन सभी की बाकायदा तारीफ (परिभाषा) भी कुरान शरीफ में मौजूद है। काफिर, मूमिनीन और मुनाफिकीन के नामों से सूरः भी है।

इन सबमें सबसे खतरनाक किस्म के लोग मुनाफिक है। अहले जोक इनके मुतअल्लिक कुरआनी इरशादात से फ़ैज़याब हो सकते हैं। हमने "मुनाफिकत" को पहले उजागर किया है चूँकि यह कर्मो-बेश हर शख्स की शख्सित का हिस्सा है। बाहर से कुछ अन्दर से कुछ। किसी आदमी को इस मुनाफिकत से भले ही फायदा होता रहे, मगर इस माह की आयत के तुर्जुमे में जो warning है, उसे भी नोट कर ले कि "..... वह (अल्लाह तआला) बाज़ न रहेगा जब तक खबीस (wicked) और तथ्यिब (good) को छोट कर अलग-अलग न करले। जब ऐसा होता है तो जो शर्मिन्दगी (embarassment) हिस्से में आएगी वह दुनिया की जहन्नुम होगी और कयामत का अज़ाब तो होगा ही।

अल्लाह तआला हमें अपने अज़ाब से बचाए और

मुनाफिकत से बचाए रखने की तौफ़ीक अता करे। आमीन !

2. अहादीस

1. सब्र के साथ कुशादगी का इंतज़ार इबाबत है।
2. धीरज हिकमत (अकलमंदी) का असल (मूल तत्व) है।
3. हिकमत (Wisdom) की (एक) बात हकीम की खोई हुई चीज़ है।
4. भलाई बेहतरीन (सर्वोत्तम) चलन है।

3. नहजुल बलाग़ह

(तहता कलामिल खालिक व फौका कलामिल मख़लूक - ईश्वर वाणी (कुरआन) से नीची और मनुष्य वाणी से उच्च स्थान वाली पुस्तक है नहजुल बलाग़ह)

खुतबा : जब माल की तकसीम (वितरण) में आप के (मौलाए कायनात (अ.स.) के बराबरी व मुसावात के उसूल (समता एवं समानता के सिद्धान्त) बरतने पर कुछ लोग बिगड़ उठे- तो आपने इरशाद फरमाया :

क्या तुम मुझ पर यह अमर आयद (बात लागू) करना चाहते हो कि मैं जिन लोगों का हाकिम हूँ उन पर जुल्म (अत्याचार) व ज़ियादती कर के (कुछ लोगों) की इमदाद (सहयोग) हासिल करूँ? तो खुदा की क़सम! जब तक दुनिया का किस्सा चलता रहेगा और कुछ सितारे दूसरे सितारों की तरफ़ झुकते रहेंगे, मैं इस चीज़ के करीब भी नहीं फटकूंगा। अगर यह खुद मेरा माल होता, जब भी मैं इसे सब में बराबर तकसीम (वितरण) करता। चे जाये कि (जब कि) यह माल अल्लाह का माल है। देखो! बग़ैर किसी हक़ (अनाधिकार) दादो देहिश (देना, बांटना) बे एतदाली और फुज़ूल ख़र्ची है, और यह अपने मुर्तकिब (कर्ता) को दुनिया में बुलन्द (ऊँचा) कर देती है, लेकिन आखिरत (परलोक) में पस्त (नीच) कर देती है। और लोगों के अन्दर इज्ज़त में इज़ाफा करती है, मगर अल्लाह के नज़दीक ज़लील करती है। जो शख्स (व्यक्ति) भी माल बग़ैर इस्तेहकाक़ (बिना पात्रता के) या ना अहल अफराद (अयोग्य व्यक्तियों) को देगा, अल्लाह उसे उन के शुक्रिया (धन्यवाद) से महरूम (वंचित) ही रखेगा। और उन की दोस्ती व मोहब्बत (मित्रता एवं प्रेम) भी दूसरों ही के हिस्से में जायेगा। और अगर किसी दिन पैर फिसल जायें और उन की इमदाद (सहायता) का मोहताज हो जाए तो वह उस के लिये बहुत ही बुरे साथी और कमीने दोस्त साबित होंगे।

माखुज: नहजुल बलाग़ह प्रकाशक तब्लीगे इमानी मुम्बई संस्करण 1996
- Mansoor Ali Bohra

जनाब ज़ैनब (अ.) जराअत ही नहीं मैदाने सब्र में भी ज़ब्त-ओ-इस्तिक्लाल के मिनारे काइम कर गईं और जिन पूर खतर हालात और हौलनाक माहौल में आपने सब्र फरमाया, वह सूरत जनाबे फातिमा (अ.स.) को भी पेश नहीं आई। हत्ता कि अपने नाजुक तरीन मौकों पर भी ज़ब्त-ओ-सब्र का दामन नहीं छोड़ा। बाज़ारों में फिराई गईं, दरबारों में लाई गईं, भतीजे को हथकड़ियों, बैड़ियों और तौके खारदार में जकड़ा देखती रहीं, लेकिन कभी मर्जी-ए-इलाही के खिलाफ उफ़ तक न की।

ओ रुहे सब्र फातिमा ज़ेहरा (अ.) की लाडली ! हक़ है खिताबे सानी-ए-ज़ेहरा तेरे लिए !!

लेखक कहता है कि मुझे तो ऐसा मेहसूस होता है कि जिस तरह रसूले खुदा ने ज़कूर और इनास (आदमी और औरत) दोनों सनफों के दो हक़ कोश शाहकार फराहम किये थे। उसी तरह हज़रत अली (अ.स.) ने दुनिया के सामने औरतों और मर्दों के दो मिसाली नमूने पेश कर दिये थे। उन्होंने अपनी तालीम और तरबियत के फ़ैज़ से अली-ओ-फातिमा (अ.स.) जैसे दो गिराँ क़दर नमूने इकट्ठा किये तो उन्होंने भी अब्बास और ज़ैनब (अ.स.) के पेकर में आलम-ए-इन्सानियत को दो अनमोल हीरे अता फरमाए। जिन्होंने अली-ओ-फातिमा (अ.स.) की तरह शज़र इस्लाम को हरा भरा किया और हिमायत-ए-हक़ में कोई दक़ीका उठा न रखा। अब्बास (अ.स.) ने अपनी जुराअत-ओ-शुजाअत और पार्मदो-ओ-वफादारी से और ज़ैनब अपनी फसाहत-ओ-बलागत और तदब्बुर-ओ-होशमन्दी से वह-वह मअर्के के सर किये जो आप अपनी नज़ीर थे। यह दोनों भाई बहन अगर हुसैन (अ.स.) के दस्तो बाजू न होते तो करबला का मैदान सूना और कूफ़े का बाज़ार बैरोनक रहता। यज़ीदियत इस क़दर जल्द अपने केफर किरदार को न पहुँचती।

अगर अब्बास (अ.स.) के खून ने बह कर सरज़मीने करबला में वफा के सदा बहार गुल खिलाए तो ज़ैनब (अ.स.) के वाअलियाह व मोहम्मदाह के दिलखरोश नाअरों ने फिज़ा को माअमूर किया। अगर इसी खाके शिफा में आज तक बू-ए-वफा मौजूद है तो उसी फिज़ा में आज तक नाला-ओ-शियून (रोना पीटना) की सदा मेहफूज़ है। अगर अब्बास ने अपने भाईयों को अपने सामने हुसैन (अ.स.) पर निसार किया तो ज़ैनब ने भी अपने हाथों से सजा कर अपने बच्चों को इमाम के कदमों पर न्यौछावर कर दिया।

अगर अब्बास (अ.स.) ने अपने शाने कटा कर वफा का परचम हमेशा के लिये ऊँचा कर दिया तो ज़ैनब (अ.स.) ने बाजूओं में रस्सी बन्धवा कर रिश्ता-ए-उख़वत को कयामत तक के लिये मज़बूत बना दिया। एक ने जिहाद बाला-ए-आज़ा करके सर ज़मीने करबला पर ज़ब्त के साथ शुजाअत का मज़ाहिरा किया तो दूसरे ने जिहाद बिन्नपस करके सब्र के साथ फसाहत-ओ-बलागत के मोती बिखेर दिये।

मुख़ालिफ़ फ़ैज़ों की आमद की इत्तला बेवक्त दोनों को होती थीं। एक को देख कर और दूसरे को सुन कर बच्चों की प्यास की खबर दोनों को मिलती थीं। एक को सुन कर दूसरे को देखकर। रोफोकाए हुसैन (अ.स.) की हक़ कोशियों और हुर की आमद एक आँखों से देखता था तो दूसरा कानों से सुनता था। एक ने पानी लाने के लिये अपना खून पानी की तरह बहा दिया, दूसरे ने अल्अतश-अल्अतश की आवाजे सुनकर खून के आँसू बहाए। एक ने मैदान में जाकर हुसैनी सियाह की पुशतपनाही कीं और दूसरे ने ख़ेमों में रह कर हरमे हुसैनी की निगेहबानी। एक ने सकीना (अ.स.) की प्यास बुझाने की कोशिश में जान दे दी तो दूसरे ने सकीना (अ.स.) को तमाचों से बचाने में दुर्रों की परवाह न की।

मुख़्तसिर यह कि जिहाद फीसबीलिल्लाह और आलाए कलमा हक़ में दोनों बराबर शरीक रहें और रफाक़ते इमाम (अ.स.) दोनों ने कीं। एक ने शम्शीर बकफ और दूसरे ने रसन बरदस्त, फर्क सिर्फ़ इतना है कि एक तो शम्मा-ए-इमामत पर एक दो पहर में निसार हो गया और दूसरी तरफ करबला-ओ-कूफा-ओ-शाम में नहीं बल्कि उमर भर आतिशे गम-ओ-अलम और भाई के फिराक में जला की।

“जाँ निसारों ने तेरे कर दिये जंगल आबाद खाक उड़ती थी शहीदानें वफा से पहले।”

- फख़रुद्दीन आर.वी

HOMOEOPATHIC HEALTH CARE (होम्योपैथिक क्लिनिक)

Superspeciality Homeopathic Treatment

Superspeciality in :-

<p>Dr. Raj Kumari Jain B.H.M.S. Regi. No. : 14376 Time : 4 to 7 P.M. Cont. No. - 9460928082 E-mail : dr_hhc@yahoo.co.in</p>	<table style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td>◆ Allergy - एलर्जी</td> <td>◆ Headache - सिर दर्द</td> </tr> <tr> <td>◆ Asthma - अस्थमा</td> <td>◆ Joint Problem - गाठियाँ रोग</td> </tr> <tr> <td>◆ Acidity - एसिडिटी</td> <td>◆ Psoriasis - सोरायसिस</td> </tr> <tr> <td>◆ Children disease - बच्चों के रोग</td> <td>◆ Pimple - पिम्पल</td> </tr> <tr> <td>◆ Diabetes - शुगर</td> <td>◆ Skin disease - चमड़ी रोग</td> </tr> <tr> <td>◆ Female Disease - स्त्री रोग</td> <td>◆ Sinusitis - साइनस</td> </tr> <tr> <td>◆ Hair Fall - बाल गिरना</td> <td>◆ Weakness - अशक्ति</td> </tr> </table>	◆ Allergy - एलर्जी	◆ Headache - सिर दर्द	◆ Asthma - अस्थमा	◆ Joint Problem - गाठियाँ रोग	◆ Acidity - एसिडिटी	◆ Psoriasis - सोरायसिस	◆ Children disease - बच्चों के रोग	◆ Pimple - पिम्पल	◆ Diabetes - शुगर	◆ Skin disease - चमड़ी रोग	◆ Female Disease - स्त्री रोग	◆ Sinusitis - साइनस	◆ Hair Fall - बाल गिरना	◆ Weakness - अशक्ति
◆ Allergy - एलर्जी	◆ Headache - सिर दर्द														
◆ Asthma - अस्थमा	◆ Joint Problem - गाठियाँ रोग														
◆ Acidity - एसिडिटी	◆ Psoriasis - सोरायसिस														
◆ Children disease - बच्चों के रोग	◆ Pimple - पिम्पल														
◆ Diabetes - शुगर	◆ Skin disease - चमड़ी रोग														
◆ Female Disease - स्त्री रोग	◆ Sinusitis - साइनस														
◆ Hair Fall - बाल गिरना	◆ Weakness - अशक्ति														

पता : बोहरा जमात खाना के पास, भूतमहल रोड़, बोहरावाड़ी, उदयपुर

Ex. Doctor of Dr. Batra's Positive Health Cloning (Baroda)
Lecturer in homeopathic medical college (Dabok) Udaipur

A Treatment without side effect, Painless treatment only require Regularity, Faith & Patience.

We celebrate womanhood at every turn and corner of our life. But it is not very often that we acknowledge the role of Islam in the strength displayed by Muslim women when dealing with all and sundry. Islam is a religion that empowers women to live a life of dignity and this is evident in our reformist women who have dared all in their march to freedom. Here are some examples of global valor, courtesy Muslim Women's Newsletter.



Oman women get equal rights to own land

In a significant move towards ensuring gender equality for women, Oman has amended its land law to give women equal rights as men to own residential plots. Shaikh Saif bin Mohammed Al Shabibi, the country's housing minister, said the recent Royal decree amending the government land entitlement system was part of measures to revise the land law to cope with the housing development services being provided to the citizens.

"The recent amendment to the Land Law assures the Omani woman the right to own residential plot as in the case of man without any discrimination. This has been a clear indication to the role played by the woman as partner in the development process and her effective contribution to the construction sector," Shaikh Saif was quoted as saying..

"As per the amendment to the Government Land Entitlement Law, priority will be given to those who have not got a government plot or who do not own land at the time of submitting the application, whether by purchase, inheritance or grants," he said. - PTI

A mosque exclusively for women in Shillong

Women in the north-eastern region of India enjoy greater mobility. 'Purdah' and caste system is not so prevalent here. Women's participation in economic activities is quite high and the Asia's largest women's markets 'Ima market' ('Ima Keithel' or Mother's Market) is situated in Imphal, Manipur. All these factors have definitely left a positive impact in the life of Muslim women of this region. But patriarchal notions predominates all the liberal values and have restricted women's mobility even in this part of India

Like rest of India, women's access to public religious places like masjids is restricted by the Muslim society of North East India. Women offering prayer five times a day in mosques is a taboo in almost all societies in India. It is often preached that women world is inside the four corner of the house of her husband and she should be happy with the 'household' work only

The establishment of a masjid exclusively for women in Shillong, Meghalaya is an answer to all these stereotyping tactics against women. The Masjid was inaugurated on August 29, 2008, and about 150 women took part in prayer on the very first day. 'It's a gift to our mother and sisters for the Ramadan', said Sayedullah Nongrum, MLA and Secretary of the Shillong Muslim Union since 1982. Shillong Muslim union established in 1905 took the initiative in establishing a masjid that had facility for women as well.



Justifying women's access to the masjid, Nongrum said, 'I have seen Muslim women offering prayers with great difficulty in absence of space and privacy especially while at work or when she is out of the home. Many times I offered my office room to use for offering prayers. If our women can go to market which is considered to be the worst place for a Muslim women under the Sharia, we the menfolk are not objecting to it then why not women going to a masjid and offer prayer there? Why the fanatics are objecting to it?'

The opening of this masjid in Shillong is a step toward gender equality. If such initiatives are taken in every field and create space for women; Muslim women in this region too can contribute to their community and society.

- Anju Azad

98-year-old votes for change

A 98-year-old woman, confident that her vote will help usher in change, stood in queue at a polling station in Handwara constituency in the third phase of assembly elections in Jammu and Kashmir when the J&K elections were held recently.

"There are many problems like unemployment, bad roads and poor electricity. I am voting for someone who will change things. I am confident my vote will make a difference," said Fazi, who waited patiently for her turn to vote at the Machipora polling station although she could barely stand.

Her daughter-in-law Mehbooba said the family had difficulty in persuading the elderly woman not to come out in the winter chill. "She insisted she must vote. We wanted her to wait till the weather warmed up, but she wouldn't listen," Mehbooba said.

Muslim women's organizations prefer siyahnama to nikahnama

Muslim women's organisations have not rested their case on the model nikahnama that the All-India Muslim Personal Law Board (AIMPLB) laid down in April last.

While the nikahnama was welcomed by some organisations, albeit with some caution, some others have maintained that they prefer the siyahnama, followed since the Nizam's rule, and that the model nikahnama does not go far enough to deliver on women's rights.

Director of Shaheen, Muslim Women's Resource and Welfare Association, Jameela Nishat, says the model nikahnama would have made a difference had it clearly banned triple talaq. Regarding the nikahnama's instructions on arbitration, that domestic disputes should be settled by elders or else by the Darul Qaza,

Debatable issues

- Model nikahnama would have mattered had it banned triple talaq
- On arbitration, Muslim women should be allowed to go to court
- AIMPLB passive about women's rights of divorce
- Model nikahnama should be backed by progressive customs



she said that the idea of a parallel justice system was unacceptable and that Muslim women should be allowed to go to court over domestic disputes.

While the AIMPLB has furnished guidelines for conduct of married couples, it is passive about women's rights of divorce, she said. Under the model nikahnama, the system of 'khula' continues to prevail, whereby the woman cannot divorce her husband without his consent, but the man can divorce his wife even if she is unwilling.

Nishat cited the example of a pregnant woman, Najma, who was divorced by her husband who signed the papers in the Darul Qaza. She was not informed about it either by her husband or by the Darul Qaza and came to know after she had given birth to her baby.

- Tarangini Sriraman

Muslim woman exposes temple fraud

A Muslim woman has brought out alleged misappropriation of Rs1.3 crore in a temple fund using the right to information (RTI) Act, resulting in the suspension of an official and initiation of a probe by state police.

Nargis Bahar, 42, an RTI activist at Kakatpur village, was approached by locals with complaints of alleged corrupt practices by an official of the Maa Mangala temple. "They had mismanaged and misappropriated trust properties and temple money," Bahar said.

The temple in Puri district attracts lakhs of devotees from all over the world. Situated 50 km from the temple city of Puri, it is visited by the priests of the Jagannath temple during the Navakalebara festival.

The audit report received in reply to Bahar's RTI application revealed that about Rs1.3 crore were not accounted for by the temple officials.



THE UDAIPUR URBAN CO-OP. BANK LTD.

Call upon for : Personal Loans * Home Loans * Vehicle Loans* Business Loans
We promise competitive interest rates and speedy disposal.

Pannadhay Marg Branch
Ph: 0294 2422461 M: 9928790762

Dhan Mandi Branch
Ph: 0294 2422355 M: 9828162044

Bada Bazar Branch
Ph: 0294 2420429 M: 9414738065

Fatehpura Branch
Ph: 0294 2450762 M: 9828195535

Madhuvan Branch
Ph: 02942423542 M: 9460402651

Hiran Magri Branch
Ph: 0294 2460893 M: 9414786877

Krsihi Mandi Branch
M: 9460830453,
Ph. 0294-2482066

Rajsamand Branch
Ph: 95 2952 224022 M: 9828352116

Salumber Branch
Ph: 95 2906 231250 M: 9799003464

Fateh Nagar Branch
Ph: 95 2955 220316 M: 9001055034

And They Struck Again!

- By Asghar Ali Engineer

This article was written before the 26/11 Mumbai blast

The terrorists struck again and this time in Delhi at the time and place of their choosing — on September 13 evening when maximum number of people were out shopping. And, as usual, before investigations began the police concluded it showed SIMI pattern and hence SIMI was involved. And they also declared that the Mumbai based Tauqir, the tech-savy bomber who is at large, is behind it.

After every bomb explosion and killing of tens of innocent people, our police claims they have got at the mastermind and, until the next explosion, they pat themselves on the back that all masterminds have been rounded up. They are equipped with their confessional statements and names of all those involved and details of conspiracy and the people of India heave a sigh of relief that now no one will rain death on them.

And they strike again! Again the police pull names of other masterminds out of nothing and the search begins. The real culprits are still at large and let alone any mastermind, even other lesser beings involved in the operation are not arrested. Those arrested are mostly innocent people whom police tortured brutally and obtained confession written by police themselves.

There are two reasons for this gross failure on the part of the police. Firstly, they target youth from one community and do not think on other lines at all despite many obvious indicators and repeated attempts to draw their attention to these by human rights activists and others. Secondly, they are under pressure from ruling political bosses to solve these cases and from opposition politicians to target one community.

The ability of SIMI to organize these bombings without being detected has been blown out of all proportions. The Government was shocked out of its senses when the tribunal judge of Delhi High Court refused to extend the ban for lack of any concrete evidence. It rushed to the Supreme Court to get the ban extended and got stay order until October. In Supreme Court too it would be far from easy to get the ban extended. There is nothing concrete on record to convince the highest court to agree to continue the ban on SIMI.

The UPA Government is being misled by the intelligence agencies and also it is afraid of the BJP that if SIMI is not banned it will launch high-pitch propaganda and thus, it will lose Hindu votes. Unfortunately, our politics is based entirely on caste and communal considerations and all parties flagrantly violate all constitutional principles. The UPA Government professes to be secular but in fact, bases all its policy decisions on how BJP will react to them. One aggressive statement from BJP and UPA Government readily changes its affidavits in the highest court or readily changes its policy directions. It has lost political courage to take on communal forces and fight them politically.

For the BJP the universal solution for tackling terror is enactment of POTA so that more innocent Muslim youth can be arrested and tortured. It evades reply when confronted with the question that so many terror attacks, including one on Parliament, took place when it was in power and POTA was very much in force!

The UPA Government has no courage to get its police honestly and objectively to investigate the terror attacks so as to lay hands on the actual culprits. The SIMI office bearer denies its involvement in violent activities. When it was banned first in 2001, Shahid Badar, the organization's president, stated on oath before the tribunal, which included the high court judge Geeta Mittal (who refused to extend the ban), that "SIMI has ceased to exist after the first ban". "SIMI does not endure any illegal or violent activities and has issued strong press statements condemning illegal and violent activities."

SIMI even otherwise was an insignificant organization before it was banned. Being an extremist student organization, it was disowned by Jamat-e-Islami whose front organization it was. Thus it lost support of the Jamat which had set it up and left to fend for itself.

There is no doubt it had militant views and talked completely out of senses without understanding India's social, political and religious reality. It had no support among the Muslim masses or even the intellectuals. It was banned after the Kanpur riots in which it had played a role by putting up provocative posters with a caption 'Mahmood Ghaznavi India is waiting for you'. It was then immediately banned. All responsible Muslim leaders and intellectuals had condemned SIMI for doing so.

Thereafter, there was not much evidence of SIMI being involved in violent activities and hence, even Mulayam Singh Yadav had withdrawn cases in UP when he was Chief Minister.

We suddenly hear of SIMI after these bomb blasts began. By now the police have arrested all its top leaders and when Safdar Nagori and others were arrested from MP the police had claimed the entire top leadership has been arrested and so all terror attack cases, including the Mumbai train blasts, will be solved. Nothing of the kind has happened and Nagori and others are in police custody.

Then Ahmedabad and Surat incidents happened and several people were killed in Ahmedabad though not a single bomb exploded in Surat. It is really a mystery as to who planted these more than 20 bombs on trees, advertising boards, bridges and so on. How so many bombs could be planted without anyone noticing is a question that remains unanswered still today.

It is obvious that someone is playing his hand behind the scene and the police is unable to reach the real culprit. After every bomb blast a meeting of top police and intelligence officers from states and centre is held and a declaration is made that henceforward all agencies will coordinate and prevent any further incident. Again it happens and intelligence officers are caught napping.

Why is it happening again and again? How long will the people of India lay down their lives just because police and intelligence agencies are not ready to do hard work and not ready to get rid of their prejudices and biases.

The police have started playing the same game after the Delhi blast, i.e. arresting innocent Muslims under suspicion. One Abdur Rashid has been arrested who runs Universal Knowledge Trust and is working for spreading educational awareness among Muslims and his social work is well known. The Muslim Majlis-e-Mushawarat has strongly protested against his arrest. Again one does not know how many innocent Muslim youth will face the police wrath.

I was a member of the jury in public hearing in Hyderabad held from 22-24 August and we heard several cases of such victimization of innocent Muslims. After arresting all these victims the police claimed it has solved the case and the masterminds have been arrested but they had to be released by the court as there was no evidence except self confession (naturally obtained through torture). That is why the Sangh Parivar wants to enact POTA so that confession will become admissible as evidence and they can show that they have solved the cases.

Since POTA continued to be applied on those who were arrested before it was withdrawn many still continue to be in jail simply on the basis of their confession. Some 100 persons were arrested after the Godhra train incident, most of them poor and voiceless, and are still in jail without any sign of trial. In between, the POTA review committee even opined that there is no evidence against those arrested under POTA but the Modi Government was not prepared to release them. They are not being tried even after six years precisely because there is no other evidence against them. It is anybody's guess how long they will continue to languish in jail.

The emails being sent moments before explosion clearly show that some very intelligent people are involved using the name of Indian Mujahideen who are not only expert at hacking others e-mail addresses but also have a grip over Islamic history on one hand and Muslim situation in India, on the other. It is not a work of any novice. Their English also seem to be flawless. And mostly

those arrested under the label of SIMI so far are definitely of this caliber. This itself gives lie to police claims that they have arrested top leadership and masterminds.

One cannot expect anything from the police in the BJP-ruled states as it is part of BJP politics to target Muslim youth because this feeds its Hindu vote bank. But will the UPA at the Centre and the Congress Governments in states reflect on these hard facts and try to save the country? There is no hope as of now. As pointed out above, the Congress has lost the will to confront communal forces and it cannot afford to displease them. It is they who set the agenda.

The civil society is fragmented and not strong enough to put pressure on Government to rethink its approach towards investigation of bomb blast cases. And supposing SIMI is involved, as claimed by police, is it not again police failure that it could not keep watch on the activities of this organization after it was banned? After all it is a small organization and the Indian police is a mighty force compared to that organization. It could have easily infiltrated SIMI with its informers to paralyze its functioning.

Also to organize such blasts SIMI needs vast financial resources. Where is the money coming from? If it is coming from other country (or countries) intelligence sources have completely failed to detect illegal transfer of money. This also shows gross failure of our intelligence forces in performing their duties and protecting lives of innocent people of India. They need to be sacked for their gross inefficiency.

I think some powerful sources and organizations are behind all these terrorist activities and it requires great ingeniousness, political will and unbiased approach to solve this mystery. Otherwise people of India will continue to suffer for long time to come and the enemies of India and the terrorists will have the last laugh. The police investigation must change its direction, if they want to succeed in curbing terror.

Also, the ultimate solution lies in winning over the hearts and minds of the community rather than alienating it through arbitrary arrests and harassment of youth. Cooperation of the community will greatly reduce the risk of terrorism as ably argued by Julio Rebeiro, the former Director General of Police, in his article in Times of India on September 16. Will the ATS and Government authorities listen?

- Centre for Study of Society and
Secularism Mumbai
E-mail: csss@mtnl.net.in

बोहरा यूथ मेडीकल रिलीफ सोसायटी
उदयपुर (राज.)

Phone No. 2424886

DR. ISHAQ HUSSAIN SHAH (M.B.B.S. M.S.)
वरिष्ठ सर्जन (जनरल सर्जरी इन्चार्ज)
रोज सुबह 9.00 से 12.30 बजे एवं शाम 5.00 से 7.00 बजे तक

DR. REHANA BANU - (M.B.B.S., M.S.)
स्त्री रोग विशेषज्ञ; GYNAE & OBST.
रोज सुबह 8.30 से 12.00 बजे तक

DR. KULSUM SHAH (M.B.B.S. M.S.)
स्त्री रोग विशेषज्ञ; GYNAE & OBST.
रोज शाम को 5.00 से 7.00 बजे तक

DR. FATIMA SIRAJ (M.B.B.S., D.G.O.)
स्त्री रोग विशेषज्ञ; GYNAE & OBST.
रोज दोपहर 12.00 से 1.00 बजे तक

DR. SURENDRA NATH SHARMA (M.B.B.S. D.H.C.)
शिशु एवं बाल रोग विशेषज्ञ (PAED)
रोज शाम को 5.00 से 7.00 बजे तक

हमारे यहाँ पर सोनोग्राफी, खून व पैराबा की जाँच और दूसरी सभी तरह की जाँचें न्यूनतम लागत में की जाती हैं। प्राथमिक उपचार हेतु दवाइयों मुफ्त प्रदान की जाती हैं एवं खतना की सुविधा उपलब्ध है।

Letter to the Editor:

In response to *^bl fcnvr ls nwj jgks* I would like to say a few things. When it comes to fireworks, the Bohra Jamaat may be right. It could get dangerous with fireworks on the narrow streets of Bohrawadi, low electric wires and too many people walking around all at the same time. But even that could be handled if baratis are extremely careful and a couple of adults are supervising the kids.

About dancing in the barat and calling it biddat does not make too much sense. I am no Shariah expert to talk religiously but socially and culturally dancing in barat is no crime. We have always been the liberal Muslims tolerating and enjoying a lot of activities that are considered biddat by the extreme Islam. If we call dancing in the barat a biddat then we should call vadana a biddat, we should call music played by the bandmaster a biddat and so on and so forth.

So I think Jamaat should reevaluate this ruling. Music, dance, fireworks are all forms of celebration and Bohras should be allowed to practice them.

— Saeeda Joher Quaisar, USA

‘इस बिदअत से दूर रहो।’ के आर्टिकल बाबत सुझाव।

‘इस बिदअत से दूर रहो’ जनाब आबिद हुसैन अदीब साहब के मार्फत लिखे उनवान से मैं पूरी तरह इतिफाक रखता हूँ।

शादी के वक़्त निकलती हुई बारात में आतिशबाजी करने और नाचने पर हमारी जमाअत ने सख़्ती से मना किया हुआ है। यह कदम बोहरा यूथ और दाऊदी बोहरा जमाअत से ताअल्लुक रखने वाले हर फर्द की भलाई से ही जुड़ा हुआ है और इस पर अमल करना हम सब का फर्ज़ बन जाता है, क्योंकि हम एक तरफ अपने आपको सुधारवादी बोहरा गुट से ताअल्लुक रखने वाला बताते हैं और दूसरी तरफ हम इस बिदअत (आतिशबाजी और नाच) की हिमायत करते हैं।

मुझे अच्छी तरह याद है कि अशरा मुबारक के दिनों में हमारे मरहूम बुजुर्गवार और कौमी ख़िदमतगुज़ार आली जनाब शेख़ याकूब अली जी राज, वाइज़ के दौरान अक्सर यह फरमाते थे कि ‘‘शब्बीर राग़ खातिर माथा नि लई कपाणे— जे कोई हसे हुसैनी ते राग़ नहीं करावे।’’

लेकिन अफसोस सद अफसोस कि हमने इन लाइनों को अपने जहन से निकाल दिया है। हम अपने को सच्चा हुसैनी बताते हैं, जबकि हम अपने दिल को टटोल कर देखे कि हम आज किस मुहाने पर खड़े हैं। ‘‘राग़ नहीं करावें’’ की बात तो बहुत दूर हम खुद राग़ यानी नाच करने लगे हैं। नाचने की दौड़ में मर्द तो मर्द हमारी ख्वातीन भी पीछे नहीं है। खास कर मेहन्दी की रस्म में न सिर्फ हमारी बहनें, नाचने में हिस्सा लेती हैं बल्कि अपने नन्हें मुन्ने बच्चे—बच्चियों को भी इसके लिए

उकसाती हैं। अफसोस!

अज़ीज़ों मेहन्दी की रस्म को नाच (डांस) से संवारने की बजाय इमाम हसन अ0 स0 के शहज़ादे हज़रत कासम अ.स. (शहीद) के नाम से मेहन्दी की मजालिस बरपा कीजिये ताकि उनके सदके में दुल्हा और दुल्हन हर आने वाली बलाओं और आफतों से मेहफूज़ रहे, सलामत रहें। बराए करम आतिशबाजी कर अपने पैसों का भोड़ा दिखावा न करें और फिज़ूल खर्ची से बचे।

सुधारवादी है तो सुधारवादी ही बनकर रहिये, बिगाड़वादी बनकर नहीं।

— हातिम चाचूलिया

आतिशबाजी और नाचने को बिदअत करार देना ठीक नहीं है, क्योंकि यह दोनों से ही खुशी का इज़हार किया जाता है। हर अच्छे और खुशी के मौके पर पूरी दुनिया में इसे अपनाया जाता है।

रही बात इस पर पाबन्दी की वह सिर्फ हमारे मोहल्लों के लिये निहायत जरूरी है। क्योंकि ज़्यादातर बारात मोहल्लों से होकर गुजरती है। तंग गलियों और नज़दीक नज़दीक मकानात होने से परेशानियाँ उठानी पड़ती है। पोल्युशन आज के दौर की सबसे खतरनाक बीमारी है। नाच गाना और आतिशबाजी से शोर शराबा होता है, घरों में धुआँ जमा हो जाता है, बच्चों की पढ़ाई में खलल पैदा होती है, मस्जिदों और नमाज़ों की बेहुरमती होती है, घरों में बुजुर्गों और बीमार लोगों को तकलीफ पहुंचती है। इन सब के मद्देनजर यह पाबन्दी लगाना माकूल है।

मैं समझता हूँ कि पाबन्दी से ज़्यादा इस काम के लिये अख्लाकी ज़रत का होना लाजमी है। जुर्माना दो हजार हो या बीस हजार इस धनवान जमाने में कोई फर्क नहीं पड़ता। जब तक हम मानवीय आधार पर लोगों के ज़मीर में यह बात नहीं डालेंगे हमें निजात नहीं मिलेगी।

इसलिये मेरी यह अपील है अपने लोगों से कि यह जगह आतिशबाजी और नाचगाने के लिये कतई सही नहीं है।

— हिब्तुल्ला अत्तारी

‘‘इस बिदअत से दूर रहो’’ से मैं सौ फीसदी इतिफाक रखता हूँ। वाकई बारातों में नाचना गाना वगैरह सरासर बदतमीजी है। इसके साथ ही कौम में जड़े जमाती कुछ और बुराइयों की जानिब तवज्जो दिलाना चाहता हूँ:—

1. समाज में तेजी से पैर पसारती अनदेखी दहेज प्रथा। कभी हम शादियों में अपनी सादगी के लिए पहचाने जाते थे।

2. शादियों के खानों की बढ़ती संख्या और फिज़ूलखर्ची।

क्या हम इन बिदअतों को मिटाने की तरफ भी ध्यान देंगे ?

— शब्बीर इटारसी

Mosque bans those who won't do maatam

A wealthy Bohri business family from Wadala, Mumbai has been barred from praying at the community's Mazgaon Jamali masjid because a family member refused to follow a new diktat to observe *maatam* after every single *namaaz*.

The 31year old businessman, Z Mamnoon, in his complaint to the Byculla police, said he has been praying at Jamali Masjid for the last five years. "Of late, there has been an introduction of *maatam* with prayers, after all the compulsory prayers, on a daily basis, irrespective of the occasion. At times, I do not do the same and

prefer to offer non-obligatory prayers/recite the holy Quran instead."

On October 25, 2008 he was pulled out of the congregation by a member of the mosque committee and warned of 'dire consequences' if he visited the mosque again.

Saifuddin Dhuliawala, a member of Jamali mosque said, "If he (complainant) wants to pray at our mosque, he will have to follow our rules. We have not stopped him from praying here. *Maatam* is compulsory after every *namaaz*. If he does not want to follow the rules of the sect, he can pray elsewhere."

- Mumbai Mirror (Times of India)

Boycotted for attending funeral!

The late Zulfiqar Hussain saheb had helped many orthodox Bohras even after his excommunication. For them he was their Messiah. Therefore some of them attended his funeral in order to pay their last tribute. But the Aurangabad Amil and Jamaat members came to know of this and threatened them of ex-communication. Till know they are not being invited for any function.

- Afsar Hussain

Boycotted for moving court

A case filed by Santa Cruz resident Zoher Shaikh Sailawala (42) against the Dawoodi Bohra Masjid Trust (DBMT) in October last year resulted in Sailawala's 15-member family facing a social boycott. He claims that community members were asked by their leaders not to socialise with the family, while family members were denied entry into the mosque and the children were kicked out of the madrassa run by the trust. The boycott continues, even though Sailawala withdrew the case in July this year. A DBMT trustee claimed ignorance about this.

Sailawala had moved court as the Trust was allegedly transferring rent receipts (which are a proof of tenancy) of the shop, from where the family operates its tailoring and foreign exchange business, in his

name after the death of the shop's original tenant on October 2, 2006. The shop is owned by the Trust.

"We have been occupying and operating our business from the shop since last four years after the original tenant transferred the tenancy rights under the Maharashtra Rent Control Act," says Sailawala. "But after the death of the original tenant, the Trust refused to transfer the rent receipts in our name and demanded much more money than the legal transfer charges, so I moved court. But what have got in return is a blanket social boycott."

The family says it will now approach the State Human Rights Commission and the Mumbai police commissioner with their grievances. - The Hindustan Times

Positive signs of rising awareness

In recent years we have witnessed several incidents of open defiance of the Kothar's repressive policies in Banswada, Udaipur, Aurangabad, Hyderabad, Ujjain, Indore, Maho, Dahod, Godhara, Pune, Canada, etc. This year has seen many such incidents. These are:

1. August 14 - Parents of Burhani College, Mazgaon, oppose management move to sell off college land for commercial purpose.
2. August 21 - On Lailatul Qadr night, Amil Sheikh Yusuf of Ezzi Mohalla, Surat, Sheikh Tahir Daginawala, Sheikh Shabbir Ghadiwala and Hakimuddin are beaten up for misappropriating Rs 25 lakhs.
3. August 30 - Amil Sheikh Yusuf, his son and Tanzeem members are beaten up in Mumbai's Hussaini Masjid for selling *mussalla* space in Ramzaan.
4. August 31 - Parents, teachers and students of Saifee Girls High School Mumbai protest against move to build shopping mall on school land.
5. September 3 - Bohra women of Chennai smash two cars, one that of Sayedna's son in-law Sayyadul Khair, and beat up *jamaat* members as they are denied *iftaar* for not paying Rs1,500 per prayer mat.

Undoubtedly these are the positive signs of rising awareness and courage in the Dawoodi Bohra Community which is the result of the years of the consistent and uncompromising stand taken by the Dawoodi Bohra Reformists against many odds.

News from The Bohra Chronicle, Mumbai

Editorial Board:

Editor: Razia Sanwari; Editorial Assistants: Tauseef Hussain Mandiwala, Shabana Meyaji

Advisory Board: Abid Adeeb; Mansoor Ali Bohra; Hussain Udaipuri; Yaqub Ali Zaheer;

Mansoor Ali Nathdwarwala; Yusuf R.G.

Published by: Bohra Youth Sansthan, 73, Dr. Zakir Hussain Marg, Udaipur

Tel: 91-0294-2521719; Fax: 91-0294-2524886; email: bohra.journal@hotmail.com

Printed by: National Printers, 124, Chetak Marg, Udaipur - 313001

POSTAL ADDRESS

For more news on Progressive Dawoodi Bohras from over the world, visit <http://dawoodi-bohras.com/>

Disclaimer: The views published in this publication are solely of the contributors'. The Editor and editorial board holds no responsibilities for it.